एमपीएस–002 : अन्तर्राष्ट्रीय संबंधः सिद्धांत एवं समस्याएँ

(अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य)

पाठ्यक्रम कोड: एमपीएस-002
सत्रीय कार्य कोड: एएसएसटी / टीएमए / 2021-22
पूर्णांक: [illegible]

किन्ही पाँच प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

भाग – I

1. आत्मनिर्णय की अवधारणा और उसके अनुप्रयोग में सयुक्त राष्ट्र की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।

2. अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के अर्थ की व्याख्या कीजिए। यह सीमा सुरक्षा को कैसे प्रभावित करता है?

3. क्या आप समझते हैं कि दुनिया एकध्रुवीय, द्विध्रुवीय या बहुध्रुवीय है? वर्तमान परिस्थितियों की व्याख्या कीजिएं।

4. नृ–जातीयता क्या है? नृ–जातीय युद्धों के कारणों की व्याख्या कीजिए।

5. हजारों लोग राज्यविहीन हैं। विश्व में शरणार्थियों के दर्द और यातनाओं की व्याख्या कीजिए।

भाग – II

निम्नलिखित पर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में संक्षिप्त लेख लिखिए।

6. क) मानव सुरक्षा और न्याय
   ख) लोकतांत्रिक शांति सिद्धान्त

7. क) विश्व व्यापार संगठन की भूमिका
   ख) मानवाधिकार के मुद्दे

8. क) हथियारों की होड़ और महाशक्ति
   ख) परमाणु अप्रसार संधि

9. क) अर्न्तराष्ट्रीय संबंधों के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण
   ख) रचनावादी दृष्टिकोण

10. क) मध्य एशिया के राज्य
    ख) स्वदेशी आंदोलन

प्रश्न-2 अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के अर्थ की व्याख्या कीजिए यह सीमा सुरक्षा को कैसे प्रभावित करता है?

उ० 2 अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद समझने के लिए प्रतिशोध के अस्त्र के रूप में आतंकवाद की उत्पत्ति और अभिव्यक्ति का स्पष्ट रूप से विश्लेषण करना तथा समझना होगा।

* आतंकवाद का अर्थ -!

Terrorism शब्द लैटिन के शब्दों 'terrere' और 'deterre' से उत्पन्न हुआ है। शब्द 'terrere' का अर्थ है 'tremble' (भय से कांपना) और शब्द 'deterre' का निहितार्थ है भयभीत होना इस प्रकार Terrorism का अर्थ है लोगों को हानि पहुँचाना ताकि वे इतने भयभीत हो जाए की कांपना शुरू कर दें।

यह सरकार या राज्य के विधिसम्मत प्राधिकार को दुर्बल कर प्रणालीबद्ध हिंसा द्वारा स्पष्ट उद्देश्य प्राप्त करने की रणनीति है। विगत में हिंसा का सहारा तब लिया जाता था, जब शासक लोगों को तकलीफों से दूर करने में विफल होते थे। और वे लोगों के अधिकारों का दमन व प्रतिक्रमण का सहारा लेते थे। आतंकवाद की राजनीतिक पृष्ठभूमि होती है और हिंसा का एकमात्र तरीका होता है जिसका वे सहारा लेते है।

आतंकवादी शब्द से निंदात्मक अर्थ उत्पन्न होता है। कूलोम्बिस और वाल्फ के अनुसार "आतंकवादी संगठनों की अधिक तटस्थ, मूल्य

Topic ________ Date ________ Page No. ________

मुक्ति परिभाषा में उन्हें राज्येत्तर अभिकर्ता कहा जा सकता है जो कतिपय राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए गैरपरंपरागत और हिंसा की रूढ़िगत तकनीक प्रयोग करते हैं। वास्तव में आतंकवाद राजनीतिक उद्देश्यों के लिए हिंसा का संगठित प्रयोग है, और मुख्यतः यह निर्दोष लोगों या आसान लक्ष्यों पर किया जाता है। युद्ध के समान आतंकवाद में राजनीतिक बल लक्ष्य प्राप्त करने के लिए संगठित बल का प्रयोग अंतर्निहित है। राजनीतिक हथियार के रूप में अत्याचारी और पीड़ित दोनों ने आतंक अपनाया है। सामान्यतया एक के मित्र या सहयोगी "स्वतंत्रता सेनानी" कहलाते हैं। तो दूसरे के शत्रुओं या विरोधियों को आतंकवादी वर्णित किया जाता है।

वॉल्टर लैकअर ने आतंकवाद की परिभाषा इस प्रकार की: "कुछ उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संवैध की विधि या मुक्ति हिंसा का प्रयोग या धमकी; इसका लक्ष्य जनता में भय की स्थिति उत्पन्न करना है; यह बेरहम होता है और मानवीय मानदंडों के अनुरूप तो कदापि नहीं होता है और प्रचार आतंकवादी राजनीति में महत्वपूर्ण कारक है।

अतः आतंकवाद एक अच्छी तरह से सोची समझी रणनीति है जिसमें आतंकवादी लोगों में भय और आतंक पैदा करने के लिए हिंसा का प्रयोग करते हैं। आतंकवादी समूहों का निश्चित लक्ष्य हो भी सकता है और नहीं भी। कभी-कभी उनका लक्ष्य अस्पष्ट होता है।

-Line

आतंकवाद सीमा सुरक्षा को प्रभावित कैसे करता है

आतंकवाद एक देश में उत्पन्न होता है और वहीं कार्यवाही करता है, जैसे नेपाल में माओवादी और भारत में पीपल्स वार ग्रुप (PWG) यूके में आइरिश रिपब्लिकन पार्टी (IRP) उस आतंकवाद से भिन्न है जिसकी जड़ एक देश में है और यह अपनी उत्पत्ति के देश की सहायता से कार्यवाही करता है परन्तु यह दूसरे देश में आतंक फैलाने के लिए हिंसा का प्रयोग करता है। इस दूसरे किस्म के आतंकवाद को सीमापार के आतंकवाद के रूप में जाना जाता है। क्योंकि इसके सक्रिय कार्यकर्ताओं को उनके अपने देश से भिन्न दूसरे देश द्वारा प्रयोजित और प्रशिक्षित किया जाता है। जिस आतंकवाद का भारत 1980 के दशक से सामना कर रहा है उसकी उत्पत्ति प्रशिक्षण और पूरी सहायता पाकिस्तान में भारत की सीमापार से या पाक अधिकृत कश्मीर से है। हमारी सीमाओं के पार बड़ी संख्या में प्रशिक्षण शिविर हैं, जहां युवकों को बहकाकर ले जाया जाता है वहां उन्हें भारत में हिंसात्मक कार्यवाही करने के लिए भड़काया जाता है। प्रशिक्षित किया जाता है नकदी दी जाती है और अस्त्र शस्त्रों से लैस किया जाता है। इस सीमापार आतंकवाद के परिणामस्वरूप भारत में हजारों निर्दोष लोग मारे जा चुके हैं। इसी प्रकार इजराइल के विरुद्ध आतंकवादी कार्यवाही सीमाओं के पार से की जाती है।

Line

Topic ______ Date ______ Page No. ______

प्रश्न-3 क्या आप समझते हैं कि दुनिया एकध्रुवीय, द्विध्रुवीय या बहुध्रुवीय है। वर्तमान परिस्थिति की व्याख्या कीजिए

उ० 3 **प्रस्तावना** - संयुक्त राज्य अमेरिका पृथ्वी पर अपेक्षाकृत नई संस्कृति है, परन्तु यह पुराना और लचीला लोकतंत्र है। देश के आकार इसके प्राकृतिक संसाधन, लाभकारी भौगोलिक स्थिति और उसकी अर्थव्यवस्था के स्वरूप में विश्व की मुट्ठी भर प्रमुख शक्तियों में से यह एक ऐसा देश है जो अपने जन्म 1776 से ही स्वतंत्र देश है।

महाशक्ति के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका का जन्म

द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ न होने तक संयुक्त राज्य विश्व के मामलों में प्रमुख भूमिका निभाने में सक्षम था। तब तक संयुक्त राज्य का विदेशी हस्तक्षेप स्पष्टतः आवधिक अलगाव और प्रासंगिक सक्रियतावादी स्वरूप का था। राष्ट्रपति, डी रूजवेल्ट जिसने विनाशकारी युद्ध के दौरान संयुक्त राज्य को आगे बढ़ाया था, स्वयं रणनीतिक योजनाकार और चिंतक था। विश्व भर में युद्ध का तांडव हो ही रहा था परन्तु रूजवेल्ट आश्वस्त था, कि उस का देश विजयी बनकर उभर उठेगा, उसने अपने अधिकारियों को आदेश दिया की युद्धोत्तर अवधि में संयुक्त राज्य की आवश्यकताओं का अध्ययन करें। वास्तव में वह सही था, विश्व युद्ध की राख से संयुक्त राज्य ने विश्व की महाशक्ति के रूप में जन्म लिया।

जैसा की सभी यूरोपीय शक्ति जैसे ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और इटली ने युद्ध मे भारी नुकसान उठाया परन्तु संयुक्त राज्य की अनुपाती शक्ति संपूर्ण विश्व में किसी भी देश की तुलना मे पर्याप्त अधिक थी। सोवियत संघ की भी परंपरागत सैन्य क्षमता काफी अधिक थी और वह भी महाशक्ति के रूप में जाना जाने लगा। परन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लगभग चार वर्षों तक परमाणु शक्ति पर संयुक्त राज्य का एकाधिकार था। इसके अलावा संयुक्त राज्य का सकल घरेलू उत्पाद विश्व के कुल उत्पाद का लगभग आधा था। वास्तव मे, वह समय ऐसा था जब विश्व एक ध्रुवीय था।

वर्तमान स्थिती - आज विश्व मे संयुक्त राज्य की स्थिती की विशेषताएँ कुछ भी हो, परंतु इस बात पर कोई विवाद नहीं है कि समकालीन विश्व राजनीति में केवल संयुक्त राज्य ही महाशक्ति है। संपूर्ण भूमंडल मे यही नंबर एक की सैन्य और आर्थिक शक्ति है। इसकी सैन्य शक्ति न केवल इसके विशाल रक्षा व्यय में प्रतिबिम्बित होती है अपितु सैन्य प्रौद्योगिकी और अनुसंधान तथा विकास सुविधाओं मे उसके नेतृत्व मे भी परिलक्षित होता है। रॉबर्ट चैण्डलेर और जॉन आर. बैकर्जी ने तर्क दिया की संयुक्त राज्य की सैन्य रणनीति विश्व मे वहां दक्षता से कार्य नहीं कर सकेगी। जहाँ राज्य प्रयोजित आतंकवाद बढ़ रहा है। संयुक्त राज्य ने अफगानिस्तान मे तालिबान प्रशिक्षण शिविरों पर बमबारी कर एक बार

फिर अपनी सैन्य क्षमता का प्रदर्शन किया।
संयुक्त राज्य अमेरिका अपने अधिकांश आर्थिक प्रतिद्वन्द्वियो और प्रतियोगियो के मुकाबले सैनिक दृष्टि से लाभ मे तथा अपने संभावित सैन्य प्रतिद्वन्द्वियो की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ स्थिती मे है। यद्यपि यह सोचा जाता है की संयुक्त राज्य की सहभागिता के बिना कोई कार्य नही हो सकता है। वाशिंगटन जो कुछ भी कहता और करता है उसका विश्व भर मे प्रभाव पड़ता है।

इसके अलावा, अधिकांश देश संयुक्त राष्ट्र से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने के प्रयास कर रहे है। रॉबर्ट ई. हण्टर का कथन है की "21वीं सदी के उषाकाल मे संयुक्त राज्य को बाहरी विश्व से इतना अपने आप को उलझा हुआ पाया कि इतना इतिहास मे पहले कभी नही था।

वास्तव मे प्रत्येक अन्य देश ये और यह अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के आतिथ्य के है। अन्य राष्ट्र भी नेतृत्व के लिए अपनी सुरक्षा और विकास की सहायता के लिए, युद्ध रोकने और शांति बनाने मे कूटनीति के लिए और उन अन्तर्राष्ट्रीय निकायों के कार्यों के निर्धारण मे विवेकशील परामर्श के लिए संयुक्त ~~राष्ट्र~~ राज्य की ओर देखते है जिसमे मानव गतिविधियों की विशाल सीमा अंतर्निहित है।

प्रश्न 5 हजारों लोग राज्यविहीन हैं। विश्व में शरणार्थियों के दर्द और यातनाओं की व्याख्या कीजिए।

उ० 5 शरणार्थि का अर्थ - प्रत्येक भाषा में शरणार्थि कोई भी वह व्यक्ति जिसे अपना घर या स्थायी निवास का स्थान छोड़ने के लिए विवश किया जाता है। उखाड़े या बेघर किए गए उन लाखों लोगों को आमतौर पर असहिष्णुता, उत्पीड़न, राजनीतिक हिंसा, सशस्त्र संघर्ष या मानव अधिकारों के उल्लंघन से बचने का प्रयास करना पड़ता है। शरणार्थि उन घटनाओं का शिकार होता है जिसके लिए कम से कम एक व्यक्ति के रूप में वह उत्तरदायी नहीं है।

* विश्व भर में शरणार्थियों की स्थिती

(1) अफ्रीका - अफ्रीका में इस उभरती हुई वास्तविकता से निपटने के लिए 1969 में अफ्रीकी एकता संगठन (Association of African Unity) पारित किया गया था।

वास्तविकता यह थी कि संबंधित व्यक्ति को उनकी अपनी सरकार की सुरक्षा नहीं मिली हुई थी, इसलिए उन्हें कानूनी शरणार्थि प्रास्थिती देने के लिए यह कारण पर्याप्त था। 1969 में अफ्रीकी एकता संगठन अभिसमय द्वारा दी गई सुरक्षा का विस्तार 1951 के अभिसमय की अपेक्षा अधिक व्यापक था।

लैटिन अमेरिका - बाद में, 1984 में केंद्रीय अमेरिका में शरणार्थी संकट के बाद संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त के सहयोग से कार्टेजेना, कोलम्बिया में शरणार्थियों पर कार्टेजेना घोषणा स्वीकार की गई थी।

1969 के अफ्रीका एकता संगठन अभिसमय की परिभाषा की भांति यह भी अधिक व्यापक तरीके से शरणार्थी की परिभाषा देता है। यद्यपि घोषणा राज्यों पर कानूनी तौर पर बाध्यकारी नहीं है फिर भी इसकी व्यापक परिभाषा केन्द्रीय और लैटिन अमेरिका में शरणार्थी परिस्थितियों से निपटने के लिए प्रयुक्त की जाती है।

एशिया - एशिया के संदर्भ में एशियाई अफ्रीकी कानूनी परामर्शदात्री समिति (Asian-African legal Consultative Committee - AALCC) 1966 के शरणार्थी के व्यवहार से संबंधित सिद्धांत या बैंकॉक सिद्धांत क्षेत्र में शरणार्थी सुरक्षा पर विचार करते हैं। इसमें विशेष रूप से सीमाओं पर अप्रतिरोधता या अबहिष्करण के सिद्धांतों का समावेश किया गया है। फिर भी ये सिद्धांत बाध्यकारी नहीं हैं और इसका प्रभाव वैसा नहीं होता है जैसा अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में।

क्षेत्रीय स्तर पर कोई व्यापक कानूनी दस्तावेज नहीं है जो क्षेत्र में शरणार्थी सुरक्षा के लिए ढाँचा मुहैया करता हो। दक्षिण एशियाई राज्यों में से कोई भी शरणार्थी सुरक्षा पर अन्तर्राष्ट्रीय दस्तावेज के हस्ताक्षरकर्ता नहीं हैं।

अफ्रीका :- दक्षिण अफ्रीका में रंग भेद दमनकारी शासन प्रणाली का उदाहरण है। रंग-भेद, प्रजातियों के पृथक विकास की नीति थी, इसे अफ्रीका नेर राष्ट्रवादी पार्टी ने 1948 में शुरू किया था।

1960 और 1990 के दशकों के दौरान अफ्रीका में अपने उपनिवेशी मालिकों के विरुद्ध हिंसक उपनिवेश विरोधी स्वतंत्रता आंदोलन के फलस्वरूप महाद्वीप से बाहर बलपूर्वक आप्रवासन किया गया।

यूरोप :- सितंबर 1935 में जर्मनी में हिटलर के शासन के दौरान नूरेमबर्ग कानूनों के बाद यहूदियों को नागरिकता और मताधिकार से वंचित किया गया था। नाजी शासन के दौरान उनके उत्पीड़न के फलस्वरूप जर्मनी से यहूदी शरणार्थी का पलायन बढ़ गया।

अभी हाल ही में पूर्व यूगोस्लाविया में संजातीय तनाव यूरोप में शरणार्थी प्रवाह का मुख्य कारण रहा है। संजातीय रूप से समरूप क्षेत्रों के निर्माण के लिए संजातीय निष्कासन को जानबूझकर अपनाई नीति के कारण क्रोशिया, बोस्निया, कोसोवो से शरणार्थियों की बाढ़ सी आ गई।

एशिया :- भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन में 1947 में भारत और पाकिस्तान का निर्माण हुआ, इसके फलस्वरूप दोनों तरफ शरणार्थियों का आवागमन हुआ। एक ही समय में लगभग 1 करोड़ 25 लाख विस्थापित हुए।

इण्डोचीन से फ्रांसिसी उपनिवेश समाप्ति के बाद नवनिर्मित देशों - वियतनाम कंबोडिया

-Line

Topic _____ Date _____ Page No. _____

और लाओस में 1975 में समाजवादी सरकार सत्ता में आई। इसके बाद 3 मिलियन लोगों का निष्क्रमण हुआ। 1978 तक 62,000 वियतनामी शरणार्थी थे जिन्हें सामान्यतः "नौका लोग" कहा जाता था, क्योंकि वे दक्षिण पूर्वी एशिया से समुद्रतट पर समुद्री मार्ग से आते थे।

शरणार्थी सुरक्षा : वर्तमान परिदृश्य

आज अप्रवासी संकट की जटिलता, मात्रा और श्रेणीयाँ बढ़ गई है। साथ ही क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शरणार्थी सुरक्षा भी सिकुड़ रही है विकसित देशों द्वारा शरणार्थियों की सुरक्षा और सहायता के मामले में सामूहिक शेयर करने के अभाव का तृतीय विश्व के देश अनुकरण कर रहे हैं। उनका तर्क है कि आर्थिक और संसाधन कठिनाइयाँ वहीं अधिक है बेरोज़गारी की दर भी बहुत ऊँची है। उन लोगों की दशा जिन्हें अपने निवास स्थान को छोड़ने के लिए विवश किया गया, परन्तु अपनी राष्ट्रीय सीमाएँ पार नहीं कर सके या आंतरिक रूप से विस्थापित हुए हैं उनकी दशा तो और भी अधिक खराब है।

प्र० 7 (क) विश्व व्यापार संगठन की भूमिका

विश्व व्यापार संगठन (W.T.O) की स्थापना जनवरी 1955 में, "व्यापार और सीमा शुल्क के सामान्य समझौते" (GATT) के उत्तराधिकारी के रूप में हुई। इसका मुख्यालय जिनेवा में है। जहाँ गैट मूलतः सामान के व्यापार पर ध्यान देता है, वहीं विश्व व्यापार संगठन के विस्तृत क्षेत्राधिकार में वस्तुओं के अतिरिक्त, सभी सीमा पार से होने वाले व्यापार, जिनका सम्बन्ध सेवाओं से, विचारों से, तथा व्यक्तियों के आवागमन से है, विश्व व्यापार संगठन का मूलभूत सिद्धांत है कि ऐसे अंतर्राष्ट्रीय परिवेश की स्थापना की जाए जिसमें वस्तुओं (Goods), सेवाओं (Services) तथा विचारों (ideas) का निर्बाध्य आना जाना हो सके।

विश्व व्यापार संगठन के चार प्रमुख दिशा निर्देश हैं: बिना किसी भेदभाव के व्यापार बाज़ारों में सभी की मुक्त और प्रगतिशील पहुँच उचित प्रतिस्पर्द्धा को प्रोत्साहन तथा उत्साह-पूर्वक विकास और आर्थिक सुधार। विश्व व्यापार संगठन की कार्यवाही संचालन में प्रत्येक सदस्य देश का एक मत (वोट) होता है चाहे किसी की व्यापारिक क्षमता कितनी भी हो। इसका एक महासचिव है जो चार वर्ष के लिए नियुक्त होता है। उसकी सुविधा के लिए चार उपमहासचिव होते हैं। पूर्व गैट के सभी सदस्यों को विश्व व्यापार संगठन की सदस्यता प्रदान की गई थी। आज कल विश्व का व्यापार का लगभग 90 प्रतिशत विश्व व्यापार संगठन के माध्यम से होता है।

Writo-Line

विश्व व्यापार संगठन की उच्चतम सत्ता एक मन्त्रिस्तरीय सम्मेलन मे निहित है, जिसकी बैठकें प्रति दो वर्ष बाद होती है। सामान्य कार्यकलाप चलाने के लिए अधीनस्थ संस्थाएँ है, जिनमें प्रमुख है, सामान्य परिषद (General Council) जो कि विवाद समाधान संस्था (Dispute Settlement body) तथा व्यापार नीति पुनर्विलोकन संस्था (Trade Policy Review body) के रूप मे भी कार्य करती है। सामान्य परिषद तीन प्रमुख संस्थाओं के द्वारा कार्य संचालन करती है।

विश्व व्यापार संगठन की प्रतिबद्धता थी विकासशील देशों का हित, परन्तु इसने कई चिंताजनक प्रवृत्तियों की ओर संकेत दिए है। प्रमुख विकसित देशों के पास प्रचुर मात्रा मे संसाधन है, तथा उनके लक्ष्य भी स्पष्ट है। वे चाहते है कि विश्व व्यापार संगठन के मंच का प्रयोग करके वे अपने उत्पादों, व्यापारियों, सेवा प्रदानकर्ताओं का विस्तार और विकास करें। अतः विकासशील देशों के लिए आवश्यक है की विकसित देशों के हथकंडों की अनदेखी न करें, क्योंकि इन प्रवृत्तियों की अवहेलना करके वे अपने लिए खतरा बढ़ा देंगें। विकासशील देशों को चाहिए कि वे व्यक्तिगत तौर पर, तथा संगठित होकर भी इन प्रवृत्तियों को रोकें, और अपने हितों को सुनिश्चित करें।

उ0 7 (ख)

मानवअधिकार के मुद्दे

प्रस्तावना -: मानवअधिकार निर्विवाद अधिकार है क्योंकि पृथ्वी पर मौजूद हर व्यक्ति इंसान होने के नाते हकदार है। ये अधिकार प्रत्येक इंसान को अपने लिंग, संस्कृति, धर्म, राष्ट्र, स्थान, जाति, पंथ, या आर्थिक स्थिति के बंधनों से आजाद है। मानवाधिकारों का विचार मानव इतिहास से ही हो रहा है हालांकि इस अवधारणा में पहले के समय में काफी भिन्नता है। ये वो मानदंड है जो मानव व्यवहार के कुछ मानकों का वर्णन करते हैं और कानून द्वारा संरक्षित है।

मानवाधिकार के मुद्दे -: 1. **हिरासत में मौतें** -:

पुलिस के द्वारा हिरासत में यातना और दुराचरण के खिलाफ राज्य की निषेधाज्ञाओं के बावजूद पुलिस हिरासत में यातना व्यापक रूप से फैली हुई है। जो हिरासत में मौत के पीछे का मुख्य कारण है।

2. **प्रेस की आजादी** -: सीमा के बिना संवाददाताओं के अनुमान के अनुसार दुनियाभर में प्रेस की आजादी के सूचकांक में भारत का स्थान 105 वां है।

भारतीय संविधान में प्रेस शब्द का उल्लेख नहीं किया गया है लेकिन "भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता" के अधिकार का प्रावधान किया गया है। प्रेस की आजादी पर अंकुश लगाने के लिए पोटा (POTA) का

इस्तेमाल किया गया है।

3. एल·जी·बी·टी· (LGBT) अधिकार -: जब तक दिल्ली हाईकोर्ट ने 2 जून 2009 को स्वय सहमत व्यस्कों के बीच सहमति - जन्य निजी यौनकर्मों को गैर - अपराधिक नहीं मान लिया। तबतक 150 वर्ष पुरानी भारतीय दंड संहिता की स्पष्ट धारा 377, औपनिवेशिक ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा पारित कानून की व्याख्या के अनुसार समलैंगिकता को अपराधी माना जाता था।

4. मानव तस्करी -: मानव तस्करी भारत में अवैध व्यपार है। हर साल लगभग 10,000 नेपाली महिलाए वाणिज्यिक यौन शोषण के लिए भारत लाई जाती है। बांग्लादेश से भी अवैध तस्करी हो रही है।

5. साम्प्रदायिक हिंसा -: भारत में साम्प्रदायिक संघर्ष ब्रिटिश शासन के समय से ही प्रचलित है जिसके कारण बड़ी संख्या में लोग मारे जाते है।

6. अन्य हिंसा -: जैसे कि बिहारी - विरोधी मनोभाव भी कभी - कभी हिंसा का रूप धारण कर लेता है।

यह पाया गया है की देश के आधे से अधिक कैदी पर्याप्त सबूत के बिना हिरासत में है। अन्य लोकतांत्रिक देशों के विपरीत, आम तौर पर भारत में आरोपी की गिरफ्तारी के साथ ही शुरुआत होती है क्योंकि न्यायिक प्रणाली में सुस्ती है।

Writo-Line

उ० 8 (क) हथियारों की होड़ और महाशक्ति

हथियारों की होड़ तब होती है जब दो या दो से अधिक समूह सैन्य कर्मियों और सामग्री में वृद्धि में प्रतिस्पर्धा करते है। इसमे दो या दो से अधिक राज्यों के बीच बेहतर सशस्त्र बलों के लिए एक प्रतियोगिता शामिल है, हथियारों के उत्पादन, एक सेना के विकास और बेहतर प्रौद्योगिकी के उद्देश्य से संबंधित एक प्रतियोगिता, इस शब्द का उपयोग किसी भी दीर्घकालिक बढ़ती प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति का वर्णन करने के लिए भी किया जाता है।

1897 से 1914 तक United Kingdom और Germany के बीच नौसैनिक हथियारों की होड़ शामिल हुई।

परमाणु हथियारों की होड़ :- शीतयुद्ध के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका सोवियत संघ और उनके संबंधित सहयोगियों के बीच परमाणु युद्ध मे वर्चस्व के लिए परमाणु हथियारों की दौड़ प्रतियोगिता थी। इसी अवधि के दौरान, अमेरिका और सोवियत परमाणु भंडार के अलावा, अन्य देशों ने परमाणु हथियार विकसित किए, हालांकि कोई भी दो महाशक्ति के समान पैमाने पर वारहेड उत्पादन में नहीं लगा।

भारत और पाकिस्तान में हथियारों की होड़ :- दक्षिण एशिया मे, भारत और पाकिस्तान भी 1970 के दशक से एक तकनीकी परमाणु

हथियारों की दौड़ में लगे हुए हैं। परमाणु प्रतियोगिता 1974 में शुरू हुई जब भारत ने राजस्थान राज्य के पोखरण क्षेत्र में Smiling Buddha नामक एक उपकरण का विस्फोट किया। भारत सरकार ने इस विस्फोट को "शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट" कहा, लेकिन स्वतंत्र स्रोतों के अनुसार, यह वास्तव में भारत के एक त्वरित गुप्त परमाणु कार्यक्रम का हिस्सा था।

इस परीक्षण ने पाकिस्तान में बड़ी चिंता और संदेह पैदा कर दिया, इस डर से कि यह अपने लंबे समय से कट्टर प्रतिद्वंद्वी की दया पर होगा। 1972 में पाकिस्तान की अपनी गुप्त परमाणु परियोजनाएं थीं, जो पहले भारतीय हथियार के विस्फोट के बाद से कई वर्षों तक चली। 1974 के परीक्षण के बाद, पाकिस्तान के परमाणु बम कार्यक्रम की गति काफी तेज हो गई, जिसका समापन सफलतापूर्वक अपने स्वयं के परमाणु हथियारों के निर्माण में हुआ।

कुछ दशकों में, भारत और पाकिस्तान ने परमाणु सक्षम रॉकेट और परमाणु शून्य प्रौद्योगिकियों का विकास करना शुरू किया। अंत में 1998 में, भारत - अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार के तहत - परीक्षण ने पाँच और परमाणु हथियारों का विस्फोट किया। पाकिस्तान के भीतर भारी दबाव बनने लगा और प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ एक परीक्षण का आदेश दिया, जवाबी कार्यवाही में छह परमाणु हथियारों का विस्फोट किया और एक निवारक के रूप में कार्य किया।

Writo-Line

उ० 8 (ख) परमाणु अप्रसार संधि :-

- परमाणु अप्रसार संधि एक बहुदेशीय संधि है जिस पर 1968 में हस्ताक्षर हुए और जो 1970 से प्रभावी है। वर्तमान में इसमें 190 सदस्य है।
- इसका उद्देश्य परमाणु अस्त्रों के प्रसार को तीन दृष्टि से रोकना है -

(i) अप्रसार

(ii) निरस्त्रीकरण

(iii) परमाणु ऊर्जा का शांतिपरक उपयोग

NPT के मुख्य प्रावधान

- इस संधि पर हस्ताक्षर करने वाले देश ने यदि अभी तक परमाणु अस्त्र नहीं बनाए है तो वह भविष्य में ऐसे अस्त्र बनाने का प्रयास नहीं करेगा।
- परमाणु अप्रसार संधि के जिस सदस्य देश के पास पहले से ही परमाणु हथियार है वह निरस्त्रीकरण के लिए काम करेगा।
- सभी देश शांतिपरक उद्देश्यों के लिए कतिपय सुरक्षाओं के साथ परमाणु तकनीक प्राप्त कर सकते है।

Topic _____ Date _____ Page No. _____

- इस संधि में परमाणु अस्त्र वाला देश उस देश को कहा गया है जिसने 1 Jan, 1967 से पहले परमाणु अस्त्र बना लिया है।
- संधि के अनुसार शेष अन्य देश परमाणु अस्त्र विहीन देश माने जाते है।
- जिन पाँच देशों को परमाणु अस्त्र देश माना जाता है, वे है चीन, फ्रांस, रूस, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका।
- परमाणु अप्रसार संधि के देशों को शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु ऊर्जा का निर्माण, उत्पादन एवं उपयोग करने से नहीं रोकती।

परमाणु अप्रसार संधि के अनुसार देशों की भूमिका

- NPT के अनुसार परमाणु अस्त्र रखने वाले देश परमाणु हथियार किसी दूसरे देश को नहीं देंगे और न ही किसी परमाणु अस्त्र विहीन देश को। इस प्रकार का हथियार बनाने या प्राप्त करने में सहायता, प्रोत्साहन अथवा उत्प्रेरणा देंगे।
- परमाणु अस्त्र विहीन देश किसी भी स्त्रोत से परमाणु अस्त्र प्राप्त नहीं करेंगे और न ही उसे बनाएँगे।
- परमाणु अस्त्र विहीन देश अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी द्वारा निर्धारित सुरक्षा नियमों को अपनी अथवा अपनी नियंत्रण वाली परमाणु सामग्रियों पर लागू करेंगे।